A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320-7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

भिऊरी गीत: सिरमौर के हाटी क्षेत्र की लोकगाथा, पारिवारिक संवेदना और सांस्कृतिक निरंतरता का अध्ययन

Monika Kumari[1], Dr. Purvi Luniyal[2]

1 Ph.D. Research Scholar, Eternal University, Baru Sahib
2 Associate Professor and Deanm, Eternal University, Baru Sahib

Read the Article Online

Cite this Article

Published on 30 April, 2026

Kumari, M. and Kuniyal, P. (2026). Bhiuri Geet: Sirmaur Ke Hati Kshetra Ki Lokgatha, Parivarik Samvedna Aur Sanskritik Nirantarta Ka Adhyayan. Swar Sindhu, 14(1), 30-32.

सारांश

भिऊरी गीत हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जनपद के हाटी क्षेत्र में प्रचलित एक करुणप्रधान लोकगाथा है। यह गीत दिवाली एवं भाई दूज के अवसर पर विशेष रूप से गाया जाता है तथा इसके साथ पारम्परिक रासा नृत्य का आयोजन होता है। प्रस्तुत शोधपत्र में इसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, संरचनात्मक विशेषताएँ, कथावस्तु, रस-विश्लेषण एवं सामाजिक-सांस्कृतिक महत्त्व का अध्ययन किया गया है। अध्ययन मौखिक परंपरा, क्षेत्रीय साक्षात्कार एवं उपलब्ध साहित्यिक स्रोतों पर आधारित है।

मुख्य शब्द: *भिऊरी गीत, हाटी क्षेत्र, लोकसंगीत, करुण रस, रासा नृत्य, लोकस्मृति*

प्रस्तावना

हिमाचल प्रदेश का सिरमौर जनपद लोकसंस्कृति और लोकसंगीत की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध रहा है। विशेषतः हाटी क्षेत्र में लोकगीतों की विविध शैलियाँ सामाजिक, धार्मिक और पारिवारिक जीवन का अभिन्न अंग हैं। साधारण एवं ग्रामीण जनता जो प्रायः निरक्षर होती है, समय समय पर अपनी आशा, निराशा, हर्ष-विषाद, जीवन-मरण, लाभ हानि तथा दुःख सुख आदि अभिव्यजित करती है, वही लोकसंस्कृति है। भिऊरी गीत इसी परंपरा का एक मार्मिक उदाहरण है, जो एक लोककथा पर आधारित करुण गाथा के रूप में आज भी जीवित है।यह गाथा पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा के माध्यम से संरक्षित रही है। यह गीत दिवाली पर्व पर गांव की विवाहित व अविवाहित ध्याणियों (लड़कियों) द्वारा रासा नृत्य करते हुए सामूहिक रूप से गाया जाता है। यह गाथा गीत लोकस्मृति का महत्वपूर्ण स्रोत है।

भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

भिऊरी गीत का प्रचलन शिलाई एवं रेणुकाजी क्षेत्र (हरिपुरधार, रोहनाट आदि) में विशेष रूप से देखा जाता है। दिवाली के अवसर पर विवाहित बेटियों का मायके आगमन सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसी सांस्कृतिक संदर्भ से यह गीत जुड़ा हुआ है।

गीत का प्रकार एवं संरचना

भिऊरी गीत अनिबद्ध लोकगीत है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं— पुनरावृत्ति, संवादात्मक शैली, स्थानीय पहाड़ी शब्दावली, सामूहिक प्रस्तुति एवं करुण भाव की प्रधानता। गीत का गायन भावानुकूल लय-प्रवाह में किया जाता है।

पारम्परिक भिऊरी गीत के बोल

नोइटे बाशो ला रे बोली उजो, नोइटे बाशो ला उजो-2

आई पोडोई री रे बोली दुजो, आई पोड़ोई री दुजो-2

माइये रूणो रो रे थोउ लाई, माइये रूणो रो लाई-2

लोकों री पाउणी रे गोई आई, मेरी ना भिऊरी आई-2

बेलुआ बूलबी रे ताखे भाई, बेलुआ बूलबी भाई-2

भिऊरी रा बोइदू रे बोली जाई, भिऊरी रा बोइदू जाई-2

जाणो रा आथी ना रे बोली डोरो, जाणे रा आथी ना डोरों-2

परानू ने भिऊरी रा रे बोली घोरो, परानू ने भिऊरी घोरो-2

कूणिखे पाथली रे बोली पोली, कूणिखे पाथली पोली-2

सेजा ऐ भिऊरी रा बोली घोरो, जिन्दीऐ पूरबो खोरी-2

कुकिटा कूओ ला बोली चाबे, कुकिटा कूओ ला चाबे-2

सेजा ऐ भिऊरी रा बोली घोरो, जीन्दीऐ लिशणी लाबे-2

बेलुआ बोइदू से गीया जाई, बेलुआ बोइदू जाई-2

भिऊरी रे आंगने रे गीया आई, भिऊरी रे आंगने आई-2

तू लागा किएशा रे बोली आई, तू लागा किए शा आई-2

हाउ लागा घोरे शा रे बोली आई, हाउ लागा घोरे शा आई-2

दुखी ऐ बाबा रो तेरे माई, दुखी ऐ बाबा रो माई-2

दुखी ऐ भोइटूरोतेरे भाई, दुखी ऐ भोइटू भाई-2

ता थोई पाउणी रे बोवाई, ता थोई पाउणी बोलाई-2

पोती रे नोगरे रे मेरू जाई, पोती रे नोगरे जाई-2

मुखे देले कापडू रे ले आई, मुखे देले कापडू ले आई-2

हां जाउंगी पाउणी रे तोबे आई, हा जाउंगी पाउणी आई-2

डालिटी फूलो रे बोली होरी, डालिटी फूलो रे होरी-2

ओदडी बाटो दी रे गोली आई, ओदडी बाटो दी आई-2

भिऊरी जानीए रे गोई जाई, भिऊरी जानीए जाई-2

भावार्थ एवं कथावस्तु

गीत की प्रारंभिक पंक्तियों में प्राकृतिक संदर्भों और स्थानीय कहावतों के माध्यम से वातावरण निर्मित किया गया है। कथा का मुख्य प्रसंग भाई दूज के पर्व से संबंधित है। गाँव की सभी विवाहित बेटियाँ अपने मायके आ चुकी हैं, किंतु भिऊरी नहीं आई। उसकी माँ व्याकुल होकर विलाप करती है।वह बेलुआ नामक युवक को भिऊरी को बुलाने भेजती है। बेलुआ जब भिऊरी के घर पहुँचता है, तो वह त्यौहार के दिन उसके आने का कारण पूछती है। बेलुआ बताता है कि माता-पिता और भाई-बहन सब दुखी हैं तथा उसे पावणी (त्यौहार पर मायके आने) के लिए बुलाया गया है।भिऊरी उत्तर देती है कि उसका पति नगर गया है और नए वस्त्र लेकर आएगा; उसके लौटने पर ही वह मायके जाएगी। पति के लौटने के पश्चात वह मायके के लिए प्रस्थान करती है, किंतु मार्ग में ही उसकी हृदय गति रुक जाने से मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार माता-पिता की पुत्री से मिलने की अभिलाषा अधूरी रह जाती है। यही घटना लोकस्मृति में स्थायी रूप से अंकित हो जाती है।

स्वर-लिपि

रे - ग म म रे रे - म

नो ऽ इ टे बा ऽ शो ला ऽ

ग रेरे सा – सा -

रे बोली ऊ ऽ जो ऽ

रे - ग म ग रे रे – रे सा सा

नो ऽ इ टे बा शो ला ऽ ऽ ऊ जो

म रे रे - म ग रेरे सा – सा -

बा ऽ शो ला ऽ रे बोली ऊ ऽ जो ऽ

रे - ग म ग रे रे – रे सा सा

नो ऽ इ टे बा शो ला ऽ ऽ ऊ जो

निष्कर्ष

भिऊरी गीत सिरमौर के हाटी क्षेत्र की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है। यह लोकस्मृति, करुण संवेदना और पारिवारिक मूल्यों का जीवंत दस्तावेज है। आधुनिक समय में इसके संरक्षण, प्रलेखन और अकादमिक अध्ययन की अत्यंत आवश्यकता है, ताकि यह लोकपरंपरा भावी पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सके।

संदर्भ

गौतम, खुशीराम। (1992). सिरमौरी लोक साहित्य। शिमला: हिमाचल कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी।
शर्मा, रामनाथ। (2015). हिमाचल प्रदेश का लोकसंगीत। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
वर्मा, संजीव कुमार। (2018). सिरमौर की लोकसंस्कृति। शिमला: हिमालयन पब्लिकेशन।
क्षेत्रीय लोकगायिकाओं से मौखिक साक्षात्कार। (2025). साक्षात्कारकर्ता: मोनिका कुमारी। स्थान: सिरमौर, हिमाचल प्रदेश।